Navchetana Homilies

Sep 22, 2019

Dt 9:1-6

Is 25:1-8

Phi 3:1-11

Mt 17:14-21

एलियास–सलीब–मूसा काल का तीसरा रविवार

"मतलब की है दुनिया

कौन किसका होता है।

देता वही शान्ति,

जिस पर हम विश्वास करते हैं।"

विश्वास पर्व के आखिरी पलों में हम पहुँच चुके हैं। यह एक ऐसा समय है कि हम अपने विश्वास को परखकर देखें, आज का सुसमाचार भी अपने विश्वास के ऊपर मनन–चिन्तन करने का एक मौका देता है। संत मत्ती (10:1) में हम देखते हैं "ईसा ने बारह शिष्यों को अपने पास बुलाया और उन्हें अशुद्ध आत्माओं को निकालने तथा हर तरह की बिमारी और दुर्बलता दूर करने का अधिकार प्रदान किया। लेकिन आज के सुसमाचार में हम यह देखते हैं कि अशुद्ध आत्मा से पीढ़ित एक लड़के को चंगा करने में शिष्यगण असफल हो जाते हैं। ईसाई होने के नाते, प्रभु के चेले होने के नाते, प्रभु ने हम सबों को विश्वास करने का वरदान दिया है। लेकिन इस

विश्वास को महसूस करने और प्रज्वलित करने में हम चूक जाते हैं। विश्वास ईश्वर का एक वरदान है उसकी गहराई तक जाना और प्रज्वलित करना हर एक ख्रिस्तीय का कर्तव्य है। मुझे लगता है हम प्रभु में विश्वास करने से ज्यादा हमारी किस्मत पर भरोसा रखते हैं। हमारी क्या किस्मत हो सकती है? हम आज है, कल नहीं। जो कुछ है सब ईश्वर ने दिया है, कभी किस्मत पलटती है, कभी किस्मत फूटती है। एक कहानी है – एक गाँव के सारे लोगों में सिर्फ एक ही व्यक्ति के पास घोड़ा था इसलिए सब लोग उसे भाग्यशाली मानते थे। एक दिन वह घोड़ा घर से कहीं भाग गया, तो सारे गाँव वाले उसके पास आये और कहा "तुम कितने दुर्भाग्यशाली हो जो तुम्हारा घोड़ा चला गया।" तीन महीने के बाद वह घोड़ा तीन और घोड़ों के साथ घर वापस लौट आया। यह देखकर गाँव वालों ने उससे कहा "तुम कितने भाग्यशाली हो तुम्हारे पास चार घोड़े हो गये।" एक दिन उसका बेटा घोड़े की सवारी करने की कोशिश कर रहा था। घोड़े ने उसे गिरा दिया और उसके हाथ–पाँव टटू गये। तो सब गाँव वालो ने उससे कहा "तमु कितने दुर्भाग्यशाली हो जो तुम्हारे बेटे के हाथ–पाँव टटू गये।" कुछ समय बाद उस राज्य में युद्ध शुरू हो गया। राज्य की सुरक्षा करने के लिए राजा ने सैनिकों को सभी युवकों को लाने का आदेश दिया। सैनिक सब युवकों को ले गये लेकिन उसके बेटे के हाथ–पाँव टूटे होने के कारण उसे छोड़ दिया। सभी गाँव वालों ने उससे कहा कि तुम कितने भाग्यशाली हो जो सैनिक तुम्हारे बेटे को नहीं ले गये। यही होता है, हमारी जिन्दगी में भी कई क्षण हमारे भाग्य का होता है, वही क्षण दुर्भाग्य में भी बदल जाता है। हमारी कोई किस्मत नही ंहोती अर्थात जो भी होता है ईश्वर की देन है। इसलिए उस ईश्वर पर विश्वास रखो जिसने इस दुनिया को बनाया है। वह जानता है कि हमारी जिन्दगी की जरूरतें क्या हैं? इसी भरोसे को ध्यान में रखकर संत पॉल कहते हैं – "जो मुझे बल प्रदान करता है, उनकी सहायता से मैं सब कुछ कर सकता हूँ।" (फिलि 4:13) जिन्दगी में

सिर्फ सुख और सफलता का अनुभव करके उसने यह नहीं कहा। इस कथन के पहले वह कहते हैं – "मैं दरिद्रता तथा सम्पन्नता दोनों से परिचित हूँ। चाहे परितृप्ति हो या भूख, समृद्धि हो या अभाव – मुझे जीवन के उतार–चढ़ाव का पूरा अनुभव है।" (फिलि 4:12) जिन्दगी तो उतार–चढ़ाव, उत्कर्ष और पतन का इतिहास है। वह सुख–दुःख का ज़खीरा भी है और गाथा भी। एक दिन एक पोलियो–ग्रसित विद्यार्थी वैसाखी के सहारे कॉलेज आ रहा था। उसे आते देखकर अध्यापक ने पूछा – "ऐसा दुर्भाग्य होने के बावजदू भी तुम इतने आत्मविश्वास के साथ संसार का सामना कैसे करते हो?" मुस्कुराते हुए उस विद्यार्थी ने कहा – "सर, इस बीमारी ने कभी मेरे मन को नहीं छुआ है।" तन की बीमारी ने यदि मन में बसेरा बना लिया तो तन के साथ मन भी बीमारग्रस्त हो जाता है। चीनी लोगों में एक कहावत प्रचलित है – "दुःख की चिड़िया का हमारे सिर के ऊपर से उड़ना हम रोक नहीं सकते, पर उनका हमारे सिर के बालों में घोंसला बनाना तो हम जरूर रोक सकते हैं।" सच है कि दुःख को हम जिन्दगी से अलग नहीं कर सकते हैं। जिन्दगी की बदलती ऋतुओं में दुःख ही तो गहरे रगं भरते हैं। पर उन्हें स्थायी रूप से रहने न दें। यह चीनी कहावत हमें ऐसे अवसर पर याद दिलाती है कि दुःख को ही जीवन की कथा–व्यथा न बनने दें। "वह कितना महान है जिसे प्रज्ञा और ज्ञान प्राप्त है, किन्तु जो प्रभु पर श्रद्धा रखता है उससे महान कोई नहीं। 'भक्ति' प्रभु पर श्रद्धा से प्रारंभ होती है, किन्तु मनुष्य विश्वास द्वारा प्रभु से संयुक्त हो जाता है। (प्रवक्ता ग्रन्थ 25:13,16)

Fr. Nithin CMI